परमात्म ऊर्जा

बीमारी की सहज दवा....

खुशी की गोली और इंजेक्शन : ब्राह्मण बच्चे अपनी बीमारी की दवाई स्वयं ही कर सकते हैं। खुशी की खुराक सेकण्ड में असर करने वाली दवाई है। जैसे वह लोग पॉवरफुल इंजेक्शन लगा देते हैं तो चेंज हो जाते। ऐसे ब्राह्मण स्वयं ही स्वयं को खुशी की गोली दे देते हैं व खुशी का इंजेक्शन लगा देते हैं। यह तो स्टॉक हरेक के पास है ना! नॉलेज के आधार पर शरीर को चलाना है। नॉलेज की लाइट और माइट बहुत मदद देती है। कोई भी बीमारी आती है तो यह भी बुद्धि को रेस्ट देने का साधन है। सूक्ष्मवतन में अव्यक्त बापदादा के साथ दो दिन के निमंत्रण पर अष्ट लीला खेलने के लिए पहुंच जाओ फिर कोई डॉक्टर की भी ज़रूरत नहीं रहेगी। जैसे शुरु में संदेशियां जाती थीं, एक या दो दिन भी वतन में ही रहती थीं ऐसे ही कुछ भी हो तो वतन में आ जाओ। बापदादा वतन से सैर कराते रहेंगे, भक्तों के पास ले जायेंगे, लण्डन, अमेरिका घुमा देंगे।

विश्व का चक्र लगवा देंगे। तो कोई भी बीमारी कभी आये तो समझो वतन में निमंत्रण आया है, बीमारी नहीं ऑर्डर है।

सिर्फ सर्विस में नहीं पुरुषार्थ में भी एवररेडी

ऐसा लक्ष्य रखना है जो कोई कमाल करके दिखाए। तब कहेंगे बड़े। जैसा-जैसा कर्म करेंगे वैसा-वैसा नाम पड़ेगा। अगर श्रेष्ठ काम करेंगे तो नाम पड़ेगा श्रेष्ठमणि। श्रेष्ठमणि को सर्व कार्य श्रेष्ठ करने पड़ते हैं। मन, वाणी, कर्म में सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं।

बच्चे बाप से बड़े जादूगर हैं। बाप से बड़े जादूगर इसलिए, जो बाप को बनाने चाहते वह बना सकते हैं। बाप के लिए तो गायन है कि जो चाहे सो बना सकते लेकिन वह कौन? बच्चे। अव्यक्त होते भी व्यक्त में लाते यह जादूगरी कहें? अव्यक्त होने के दिन नज़दीक हैं तब तो अव्यक्त की लिफ्ट मिली है। ज्ञान मूर्त और याद मूर्त दोनों में समान बनना है। जब चाहे तब ज्ञान मूर्त, जब चाहे तब याद मूर्त बनें। जितना जो खुद याद मूर्त हो रहता है उतना ही वह औरों को बाप की याद दिला सकते हैं। याद मूर्त बन सभी को याद दिलाना है। समय का इंतज़ार करती हो या समय तुम्हारा इंतज़ार करता है? समय के लिए अपने को इंतज़ार नहीं करना है। अपने को सदैव ऐसे ही एवररेडी रखना है। जो कभी भी समय आ जाये। इंतज़ार को खत्म करके इंतज़ाम रखना है। जब अपना इंतज़ाम पूरा होता है फिर इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं रहती। उसको ही कहा जाता है एवररेडी। सब में एवररेडी। सिर्फ सर्विस में नहीं, पुरुषार्थ में भी एवररेडी संस्कारों को समीप करने में भी एवररेडी।

विशेष स्नेह है इसलिए विशेष बनाने की बातें चल रही हैं। वृक्ष में जो पीछे-पीछे फूल और पत्ते लगते हैं वे कैसे होते हैं? पहले वाले पुराने होते हैं और पीछे वाले बड़े सुन्दर होते हैं। पीछे वाले नर्म बहुत हैं। यहाँ नर्म में क्या है? जितना नर्म उतना गर्म। अगर सिर्फ नर्म होंगे कोई छीन भी लेगा। कोमल बनने के साथ कमाल करनी है। कोमलता और कमाल दोनों ही संग होने से कमाल कर दिखाते हैं? ऐसा लक्ष्य रखना है जो कोई कमाल करके दिखाए। तब कहेंगे बड़े। जैसा-जैसा कर्म करेंगे वैसा-वैसा नाम पड़ेगा। अगर श्रेष्ठ काम करेंगे तो नाम पड़ेगा श्रेष्ठमणि। श्रेष्ठमणि को सर्व कार्य श्रेष्ठ करने पड़ते हैं। मन, वाणी, कर्म में सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं। अगर सरलता है सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। इसलिए सरलता और सहनशीलता दोनों साथ-साथ चाहिए। अगर सहनशीलता के बिना सरलता आ जाती है तो भोलापन कहा जाता है। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरूप कहा जाता है। शक्तियों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण चाहिए।

अभी की रिज़ल्ट में यही देखते हैं कि कहाँ सहनशीलता अधिक है, कहाँ सरलता अधिक है। अब इन दोनों को समान बनाना है। मधुरता भी चाहिए। शक्ति रूप भी चाहिए। देवियों के चित्र बहुत देखते हैं तो उसमें क्या देखते हैं? जितनी ज्वाला उतनी शीतलता। कर्त्तव्य ज्वाला का है, सूरत शीतलता की है। यह है अन्तिम स्वरूप।

कथा सरिता

अपना दुःख

प्राचीन काल में दक्षिण भारत में एक छोटे से आश्रम में एक साधु रहते थे। आश्रम में एक-दो ही शिष्य थे। वहाँ पर सभी प्रकार के लोग थे। सबका कोई न कोई उद्देश्य होता। कोई अपनी मनोकामना पूर्ण करने के इरादे से आता तो कोई साधु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने आता। एक दिन एक परिवार वहाँ रोता-पीटता आया। साधु महाराज ने उससे पूछा - "क्या बात है, तुम रो क्यों रहे हो?"

परिवार का मुखिया बोला - "साधु महाराज! हमारा इकलौता बेटा मर गया, हम दुखी हैं। हमारे घर का चिराग बुझ गया है,महाराज! हम जीना नहीं चाहते। हमें इस दुनिया के जंजाल से छुड़ाओ महाराज।"

साधु ने कहा - "पुत्र, एक दिन सभी को मरना है। मत रोओ पुत्र! ये दुनिया तो विनाश होनी ही है एक न एक दिन, इसके मोह से बाहर आओ। रोने से कोई लाभ नहीं।" इस प्रकार साधु महाराज ने उन्हें अनेकों उपदेश दिये। उन लोगों में पुनः जीवन की आशा का निर्माण हुआ।

वे साधु को जीवित रहने का आश्वासन देकर वापस लौट गये। इस घटना के कुछ दिनों पश्चात उस दम्पत्ति के यहाँ एक और पुत्र ने जन्म लिया। इसकी खुशी में वह दम्पत्ति एक दिन पुनः साधु महाराज के आश्रम में जा पहुंचे। वहाँ पहुंचते ही वो आश्चर्यचकित हो उठे। उन्होंने देखा कि आश्रम में चारों ओर शांति छाई हुई थी। कहीं भी कोई नज़र नहीं आ रहा था। उस दम्पत्ति का मुखिया साधु को आवाज़ देता अंदर की ओर बढ़ा। अंदर जाकर उसने देखा कि साधु आश्रम के एक कोने में बैठे रो रहे थे। यह देखकर उसके आश्चर्य में वृद्धि हुई। उसने पूछा - "क्या बात है महाराज! आप रो क्यों रहे हैं? क्या हो गया महाराज?"

साधु ने कहा - "मेरी बकरी मर गई...।" कहकर वे पुनः रोने लगे। दम्पत्ति कुछ देर यह सोचता रहा - फिर पुनः बोला, परंतु महाराज! उस दिन तो आपने हमसे कहा था, यह जीवन आती-जाती है। एक दिन सभी को मरना है। रोने-धोने से कोई लाभ नहीं। फिर अब आप क्यों रो रहे हैं?"

इतना सुनते साधु ताव में आकर बोले - "तुम्हारा बेटा मेरा बेटा नहीं था, पर यह बकरी मेरी थी! इतना सुनते ही वह दम्पत्ति उल्टे-पांव वापस लौट गये। उनकी समझ में आ गया कि सब का दुःख अपना दुःख होता है।

शिक्षा : दूसरों को उपदेश देना सरल होता है। पर अपने ऊपर जब कोई बात आती है तो उपदेश की सारी बातें धरी रह जाती हैं।

तलेगांव-दाभाडे(महा.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में कोरोना काल में हरणेश्वर हॉस्पिटल द्वारा की गईं विशेष सेवाओं के लिए हॉस्पिटल के डॉ. श्रीकांत जातेगावकर, डॉ. ज्योति जातेगावकर तथा अन्य नर्सिंग स्टाफ को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. लता तथा ब्र.कु. नीलिमा।

पटना-बिहार। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् मंगल पांडेय,स्वास्थ्य राज्य मंत्री को ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा बहन तथा ब्र.कु. ज्योत्सना बहन।

राउरकेला-ओडिशा। सृष्टि न्यूज़ के 10वें वार्षिक महोत्सव समारोह में ब्र.कु. राजीव को समाज उत्थान के उत्कृष्ट कार्य के अंतर्गत नशा मुक्ति जागरुकता अभियान में निःस्वार्थ भाव से सेवाओं को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए प्रमोद सतपथी,एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेशन,सेल,राउरकेला स्टील प्लांट एंड प्रफुल्ल सुनयनी,पूर्व डायरेक्टर,अर्बन कोऑपरेटिव बैंक,सुंदरगढ़ ने प्रमाण पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया।

अयोध्या-उ.प्र.। राजेन्द्र सिंह पाठक,आई.आर.एस. असिस्टेंट कमिश्नर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन व ब्र.कु. उषा बहन।

भुज-गुज.। इन्नर व्हील क्लब ऑफ भुज वॉल सिटी के द्वारा विश्व शांति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करने के पश्चात् ब्र.कु. रीना बहन को शॉल और सम्मान पत्र से सम्मानित करते हुए कल्पना बहन,प्रेसीडेंट,इन्नर व्हील क्लब, सेक्रेट्री नीता हालानी तथा अन्य साथी बहनें।

भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव में आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीना बहन।